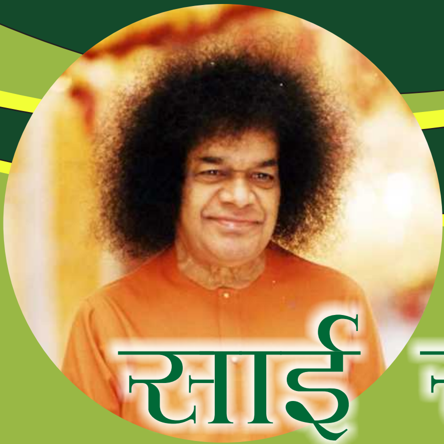

हिन्दी
दशक
उत्सव
२००७ से २०१६

साई सूत्र

बालिका यदि शिक्षेरन् शिक्षेरन् सर्वमानवाः । अभिलाषा हि सर्वेषां पठन्तु बालिकाः सदा ॥

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

राज्य स्तरीय हिन्दी महोत्सव २०१६
चित्र / पोस्टर

जेनिश पटेल (विज्ञान)

११वीं (विज्ञान) - उच्चतरमाध्यामिक विभाग

- प्रथम पुरस्कार

जसवंत एस नायक

११वीं(विज्ञान) - उच्चतरमाध्यामिक विभाग

- द्वितीय पुरस्कार

मानसी बी पटेल

११वीं (विज्ञान) - उच्चतरमाध्यामिक विभाग

तृतीय पुरस्कार

विकेन जे वाणन्द

१०वीं ब. - माध्यमिक विभाग

प्रथम पुरस्कार

कृषि एन पटेल

९वीं अ - माध्यमिक विभाग

द्वितीय पुरस्कार

देवव्रत पटेल

१०वीं ब - माध्यमिक विभाग

तृतीय पुरस्कार

साई सूत्र

सत्य वद धर्म चर

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गणेश वड सिसोद्रा, ने. हा.-८, नवसारी

Website : www.sssvn.edu.in

Publisher :	प्रकाशक :
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
Ganesh Vad, Sisodara	गणेश वड सिसोद्रा,
N.H.No -8 Navsari, Gujarat.	ने. हा. नं –८, नवसारी, गुजरात
Ph : 02637-291030,	दूरभाष : ०२६३७–२९१०३०
Website : www.sssvn.edu.in	वेबसाईट : www.sssvn.edu.in
Editors :	संपादक :
Dinesh Prajapati	दिनेश प्रजापति
(Hindi Co-Ordinator)	(हिन्दी प्रभारी)
Yogesh. A. Patel	योगेश ए. पटेल
Hindi Teacher	हिन्दी शिक्षक
Gita Patel	गीता पटेल
Hindi Teacher	हिन्दी शिक्षक
Divya Dhimar	दिव्या ढीम्मर
Hindi Teacher	हन्दी शिक्षक

© Copy Right :	© सर्वाधिकार सुरक्षित :
Sri Sathya Sai Vidyaniketan	श्री सत्य साई विद्यानिकेतन
Navsari, Gujarat	नवसारी, गुजरात.

Six Edition :	छठा संस्करण :
Diwali 30 November, 2016	दीपावली, ३० नवम्बर, २०१६
Price : Rs. 135/-	मूल्य : रु.१३५/–
Graphics & Printers :	ग्राफिक्स एवं प्रिन्टर्स :
Rangoli Graphics, Navsari	रंगोली ग्राफिक्स, नवसारी
Mo : 9428160983	मो. ९४२८१ ६०९८३
rangoligraphics83@gmail.com	rangoligraphics83@gmail.com

समर्पण

भगवान श्री सत्य साई बाबा के
चरण कमलों में समर्पित

प्रस्तावना

भारतीय भाषा की सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार हिंदी शुरू से ही अनेक बोलियों, क्षेत्रों, जातियों और धर्म के लोगों की भाषा रही है | यह भारत और भारत की सामाजिक संस्कृति की भाषा रही है | जिस प्रकार हिन्दी भाषाओं की संख्या में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि आज हिन्दी केवल भारत की भाषा न होकर विश्व की भाषा के रूप में विकसित हो रही है | हमारा निरंतर प्रयास रहा है कि अहिन्दी-भाषी राज्यों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ाया जाए | राज्य-स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे वाद-विवाद, काव्य लेखन एवं चित्र कला प्रदर्शन इसका एक माध्यम है |

प्रस्तुत '**साई सूत्र'** में कुल ३१ कविताएँ संकलित हैं | जो कि विविध भावनात्मक विषयों पर आधारित हैं | क्रमश: बचपन, अभिलाषा एवं बेटी बचाओ | आशा है पूर्व संस्करण की भाँति इस संस्करण को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पाएँगे |

भगवान श्री सत्य साई बाबा से हमारी यही प्रार्थना है कि '**साई सूत्र'** पिछले संस्करणों से एक कदम और आगे बढ़ेगा और हिन्दी भाषा प्रचार -प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देता रहेगा |

आशा है प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रियाएँ इस '**साई सूत्र'** को अधिक उपयोगी बनाने में अपनी अहम् भूमिका निभाएँगे |

'साई सूत्र' हेतु सुझाव सादर आमंत्रित हैं |

धन्यवाद,

साई राम,

बिभूति नारायण बिस्वाल
प्राचार्य
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन,
नवसारी (गुजरात)

सत्यमेव जयते

राजनाथ सिंह

RAJNATH SINGH

गृह मंत्री, भारत

HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियों

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी शुभकामनाएँ |

भाषा किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, दार्शनिक पहलुओं को जानने समझने का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है | कोई भी देश अपनी भाषा के बिना सामाजिक, पारंपरिक एवं साहित्यिक धरोहर को सहेज कर नहीं रख सकता | देश की सभ्यता एवं संस्कृति की संवाहक होती है |

हिन्दी ने अपनी मौलिक सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है | इसमें कोई दो राय नहीं कि यहाँ भाषा पूर्णत: वैज्ञानिक है | इसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है | राजभाषा हिन्दी में समरसता है और इसका अपना शब्दकोश व्यापक एवं समृद्ध है |

अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक होती है ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम संभव नहीं है | राजभाषा हिन्दी, सरकार और जनताके बीच महत्वपूर्ण कड़ी है | संविधानके अनुच्छेद ३५१ के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपागया कि भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तत्वों, तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए हिन्दीके प्रचार -प्रसार एवं अभिवृद्धि को सुनिश्चित करें |

वर्तमान में यह नितांत आवश्यक हो गया है कि भारत सरकार के कार्यालयों / उपक्रमों / संस्थानों एवं निजी संस्थाओं व व्यक्तियों के द्वारा अधिक से अधिक लाभदायक, सूचना परक एवं ज्ञान से परिपूर्ण जानकारी हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में इन्टरनेट पर उपलब्ध करवाई जाए ताकि राजभाषा हिन्दी एवं भारतीय भाषों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सके|

मैं केंद्र सरकार के कार्यालयों के प्रमुखों से अपील करता हूँ कि वे राजभाषा नीति से सम्बंधित प्रावधानों का कार्यान्वन सुनिश्चित कराने की ज़िम्मेदारी का निर्वहन करें | आइए, हिन्दी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के अपने संवैधानिक दायित्व को निभाने का संकल्प लें | मैं पुन: हिन्दी दिवस के अवसर पर आपको इस दिशामें सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ|

जय हिन्द!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2015

(राजनाथ सिंह)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	कविता का नाम	पृष्ठ संख्या
१.	बचपन की कहानी	१
२.	बचपन की सुहानी यादें	२
३.	मेरा प्यारा बचपन	३
४.	मेरा बचपन	४
५.	बचपन: एक सपना	५
६.	रंग-बिरंगा बचपन	६
७.	खोया बचपन	७
८.	खट्टा-मीठा बचपन	८
९.	मेरे यादगार पल	९
१०.	मेरी अभिलाषा	१०
११.	मुझको भी तो खिलने दो	११
१२.	पेड़ की अभिलाषा	१२
१३.	अभिलाषा	१३
१४.	देश का सहारा	१४
१५.	पंछी बनूँ	१५
१६.	चाहता हूँ	१६
१७.	बेटी	१७
१८.	बेटी हूँ	१८
१९.	मुझे बचाओ	१९
२०.	बेटी बचाओ	२०
२१.	बेटी महान	२१
२२.	सपनों की तितली	२२
२३.	सुहाना बचपन	२३
२४.	मेरी सोने की चिड़िया	२४
२५.	संकल्प	२५
२६.	छुटपन की यादें	२६
२७.	लौट आ बचपन	२७
२८.	मत मिटाओ मुझे	२८
२९.	धन्य तेरे भाग	२९
३०.	माँ तू कितनी निर्दयी है	३०
३१.	है अभिलाषा	३१

बचपन की कहानी

बचपन की कहानी याद नहीं,
बातें वो पुरानी याद नहीं |
माँ के आँचल का इल्म तो है,
पर वो नींद रूहानी याद नहीं |

छोटी सी बात पे लड़ते थे,
झूलों पर गिर-गिर चढ़ते थे|
किसी चोट के भी निशाँ तो है,
पर वो कथा पुरानी याद नहीं |

ढेरों बच्चे जब आँगन में,
था शोर - शराबा आँगन में |
माँ ने डाँटा था चिल्लाकर,
वो डाँट जबानी याद नहीं|

कितने किस्से थे दादी के |
हाथों से खाना दादी के,
लाखों नखरे .. कितना गुस्सा |
वो रातें पुरानी याद नहीं |

पापा से डर जब लगता था,
उन्हें दूर से देख के भागता था |
उस दिन क्यूँ पड़ी थी मार मुझे,
उस दिन की कहानी याद नहीं |

वो बचपन भी क्या दिन थे मेरे,
न फ़िक्र कोई .. न दर्द कोई |
बस खेलो , खाओ , सो जाओ,
बस इसके सिवा कुछ याद नहीं |
बचपन की कहानी याद नहीँ ,
बातें वो पुरानी याद नहीँ |

पटेल गौरव राजूभाई

संदीप देसाई प्राथमिक विद्यालय,
चौबीसी, नवसारी

बचपन की सुहानी यादें

आईं रे, आईं यादें चली आईं,
रंगीन बचपन की सुहानी यादें चली आईं।
वो खेलना - कूदना, वो छुपम - छुपाई,
पता चला न सुबह शाम का।
वो छुट्टी के दिन, वो आलस भरी अंगड़ाई,
रंग-बिरंगी पतंगे हमनें खूब उड़ाईं।
वो कागज़ की कश्ती पानी में तैराईं,
बारिश के गड्ढों में छलाँग भी लगाई।
वो पढ़ना - पढ़ाना, आँसू बहाना,
वो किताबों की दुनिया, वो परीक्षा की घड़ियाँ।
वो दोस्तों से लड़ना, वो रूठना - मनाना,
फिर भी साथ रहकर ही मुस्कुराना।
बचपन, जवानी और बुढ़ापा है जीवन का क्रम,
फिर भी बचपन है, मेरे लिए अनमोल।
मुझे याद आता है, वो सुहाना बचपन,
यादों से भरा , मेरा सुहाना बचपन ।

अग्रवाल मानसी सुरेशभाई
संदीप देसाई प्राथमिक विद्यालय,
चौबीसी, नवसारी

मेरा प्यारा बचपन

मेरा प्यारा बचपन
याद आता है मुझको,
माँ के पल्लू से खेलती
पापा के हाथ से खेलती
कितना याद आता मेरा प्यारा बचपन।

मस्ती से भरा था बचपन
ना कभी काम का बोझ,
बहुत खेला है मिट्टी से
परियों की कहानी सुनाती नानी
कितना याद आता मेरा प्यारा बचपन।

नहीं थी कभी कोई परेशानी
नकल उतारना था मेरा काम
कितना मज़ेदार था वह पल,
खेल –खेल से पेट भर आता
कितना याद आता मेरा प्यारा बचपन।

माँ ने कितनी सुनाई बचपन में कहानी
हँस हँस कर बेहाल हो जाती,
कितना झूठ बोला था मैंने
फिर याद आया मेरा बचपन
कितना याद आता मेरा प्यारा बचपन।

बड़े होते –होते मस्ती कम हो गई
ज़िंदगी परेशानी से भरी हो गई
नहीं कोई परियों की कहानी सुनाने वाला
सारे दिन का काम का बोझ सिर पर
कितना याद आता मेरा प्यारा बचपन

काश ! वो बचपन फिर से लौट आए!!

निधि ए. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मेरा बचपन

माँ के आँचल में रहना
पिता के साथ खेल खेलना
न जाने कब वह वक्त समाप्त हुआ
मेरा बचपन छूट गया।

हवा, फूलों से बातें होतीं
नन्हीं सी कली की तरह
प्यार के बहाव में बह चली।
पर एक किनारे पर आ रुकी
यहाँ मुझे डर लगा कि
मेरा बचपन छूट गया।

न कोई डर, न कोई शिकायत
न कोई परवाह अब यहाँ।
छोटी थी तो चंचल थी,
तितली बन उड़ती थी।
हाय! अब कहाँ गया?
वह नटखट बचपन मेरा,
बचपन से क्यों दूर हुई मैं।

अंजलि सिंह
ब्राईट डे स्कूल, बरोडा

बचपन एक सपना

एक बचपन का ज़माना था,
जिस में खुशियों का ख़ज़ाना था।
चाहत चाँद - सितारों को पाने की थी,
दिल तितली - फूलों का दीवाना था।
ख़बर न थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था।
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था।
माँ की कहानी थी,
परियों का फ़साना था,
हर मौसम सुहाना था।
छीनकर खिलौने बाँट दिये गम,
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम।
अच्छी तरह से कुछ सीखा न था,
लाद दिए बस्ते हैं भारी-भरकम।
घर आकर गृहकार्य निबटाना,
होमवर्क करने से फूल जाता दम।
देकर थपकी न माँ मुझे सुलाती,
दादी है अब नहीं कहानियाँ सुनती,
बिलख रही कैद बनी, जीवन सरगम।
था यह पल सुनहरा सा, इक सपना सा,
लेकिन नहीं है आज बचपन अपना सा

अंजलि सिंह
ब्राईट डे स्कूल, बरोडा

रंग-बिरंगा बचपन

मुझे बचपन के वे, दिन याद आते हैं,
ये पल ये लम्हे, मासूम हो जाते हैं |

वो हलकी सी तकरार, वो मीठी सी नोंक - झोंक,
वो रोज नए बहने बनाना, कल के रूठे दोस्तों को मनाना |

वो स्कूल की घंटी, वो खेल का मैदान ,
वो झील के किनारे, वो आम बागान |

वो पत्थर उछालकर, कच्चे आम गिराना ,
वो दौड़ की होड़ में, दोस्तों को गिराना-उठाना |

वो सावन के झूले, वो कोयल कूक ,
वो बारिश की रिमझिम, में नहाना|

वो बारिश के पानी से, आँगन का भर जाना ,
फिर कागज की किश्ती, पानी में बहाना |

बने ये कहाँ खो गये शायद अब तो सपने हो गए |

मेरे बचपन के वो, दिन जब याद आते हैं,
ये पल ये लम्हे , मासूम से हो जाते हैं|

मुझे बचपन के वो दिन याद आते हैं |

भगत रुपाली राजूभाई
आर. अन. जी. पटेल, सार्वजनिक स्कूल,
सिसोद्रा, नवसारी

खोया बचपन

मेरा प्यारा सा सयाना सा बचपन....
माँ की ममता से भरा हुआ आँचल....
पिता के प्रेम से सींचा हुआ बचपन....

वो मासूम सा बचपन,
माँ की गोद में पला हुआ बचपन....

ना दुनियादारी की फ़िक्र नटखट बचपन....
खुले आसमान में लहराता हुआ बचपन....

वो गलियों की छोटी-छोटी दौड़-ऐसा निर्दोष सा बचपन,
जो परिवार तक ही सीमित था, ऐसा प्यारा सा बचपन....

वो अपने दोस्तों के साथ लड़ना-झगड़ना,
और अपनी माँ के साथ आँख मिचोली खेलना,
कितना सयाना सा था वो बचपन....
न जाने कहाँ खो गया वो बचपन ?

वो बारिश के मौसम में कागज़ की किश्ती बनाकर खेलना,
वो खुले आसमान में सितारों से बातें करना....
रात को माँ की लोरी और चंदामामा की कहानियाँ सुनना
और सुनते-सुनते सपनों की दुनिया में खो जाना....

वो अपने दोस्तों के साथ हँसता-खेलता बचपन,
न जाने कहाँ खो गया वह अनमोल बचपन ?

जब भी मैं आज के बचपन को देखती हूँ तो,
एक डर सा लगता हैटी.वी., मोबाइल
और इंटरनेट में खो सा गया है ये बचपन |

जैनिका डी. शाह
डिवाइन पब्लिक स्कूल, नवसारी
(अंग्रेजी माध्यम)

खट्टा-मीठा बचपन

बचपन तो होता है निराला |
निश्छल, निर्मल मस्ती वाला
दुनिया से इसको क्या मतलब
वह तो खुद है भोला भाला |

माँ की गोदी से लोरी
सुनकर वह तो सो जाता
सपनों में तो मतवाला
कोई चिंता,नहीं फिकर
मस्ती में बीते हरदम
चेहरे पर शरारती मुस्कान
हँसे दे रोने वाला भी
बचपन में सबके संग खेला
कुछ खट्टा कुछ मीठा बचपन |

यादों पर हरदम बसाने वाला
जब दिन भर मस्ती में खेला
माँ याद पर घर चला आता।
पढ़ाई के समय खेला करता
सुहाना बचपन अब सपना है |

पटेल यश
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मेरे यादगार पल

कितना याद आता है मेरा बचपन,
माँ – पापा के संग रहती थी मैं,
पढ़ना – लिखना कुछ न आता था,
सबसे बिछड़ना पड़ा था मुझको,
फिर भी प्यारा है मेरा बचपन |
भैया था सबका दुलारा राजा,
नहीं देता था कोई मेरी तरफ ध्यान
पुराने कपड़ों को मुझे पहनना पड़ता
फिर भी सुनहरा लगता मेरा बचपन |
सबकी नफ़रत में ज़िंदगी बिताई,
माँ की गोद में बैठने को तड़पाई,
पापा को गले लगाना चाहती थी
खुलके ज़िन्दगी जीना चाहती थी
बचपन यादगार बनाना था मुझको |
बड़े होते – होते बचपन की याद आई,
फूल की कली में बचपन को खेलती,
संन्यासी से बचपन का हाल पूछती,
बस, कोई मुझे बचपन दे दो,
बचपन मेरा अनोखा पल था,
कैसे भूल जाऊँ बचपन की यादें,
माँ का ख़ूबसूरत गुस्सा खूब याद आता,
रंग-बिरंगा बचपन कोई नहीं दे पाया,
आखिर मेरा बचपन सबसे अलग था,
काश ! कोई बचपन लौटा दे मुझे|

सुहानी के. मोदी

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मेरी अभिलाषा

छोटी सी एक अभिलाषा मेरी,
डॉक्टर बन दिखलाऊँ मैं।
छू कर नीले आकाश को गर्व से,
वापस घर आ जाऊँ मैं।
सफ़ेद वर्दी वाले सैनिक,
तुम्हारी शान अपना लूँ मैं।
मैं भी कुछ ऐसा कर दिखलाऊँ,
मम्मी - पापा का मान बढाऊँ |
दीन-दुखी की की सेवा करना ,
काम है कुछ यह आसान नहीं।
कई युद्ध तुम्हें है लड़ना,
इतिहास में गड़ी है बात यही।
है मेरी भी आभिलाषा यही,
माना छोटी है यह अभिलाषा।

मानसी राय
ब्राइट.डे.स्कूल, बरोडा

मुझको भी तो खिलने दो

क्यूँ जन्म से पहले ही मारी जाती हैं बेटियाँ,
क्यूँ इस दुनिया का हिस्सा नहीं बन पाती है बेटियाँ।
आखिर क्या हैं बेटी होने में पाप,
आखिर क्यूँ खूनी बनता है बाप ?
सोचो यारों अगर जो न होती कोई बेटी,
अपना घर सूना लगता - लगता ईंट और रेती।
ये कैसी है अपनी संस्कृति की शिक्षा,
क्यूँ बेटियों को देनी पड़ती है अग्नि परीक्षा
आज क्यूँ माँ की ममता हो गई है लाचार,
आखिर क्यूँ हर बार माँ ही सहे अत्याचार,
बेटी का नाम सुनते ही हर बाप उसे नकारे,
तो मुसीबत आने पर क्यूँ माँ को पुकारे।
जिस घर में सास बेटा चाहती है,
ना मान के बहू की बात, अपनी ममता गँवाती है।
आखिर क्या सुख है बेटा और दुःख क्या बेटी होने में?
आखिर क्यूँ हर घर में खूनी बनता है बाप ?
जो पढ़ी - लिखी है बेटी तो आसमान को छू आती है,
कुछ करने की ठाने तो सब को पीछे छोड़ जाती है।
रानी लक्ष्मीबाई, इंदिरा गांधी आखिर थी तो बेटी,
एक मौका दो इन्हें भी, कुछ करके यह भी बताएगी ।
बदल रही है दुनिया यारो, बदलो अपनी सोच को,
बेटा बेटी छोड़ो अब खिलने दो माँ की कोख को।
अनदेखे सपनों से सजी इस दुनिया में,
बेटियाँ तो बनी हैं वो सपना,
जो चाह कर भी कभी टूटे ना।
इस चाँदनी रात में तारों के समान चमकती रहे वो,
यह देखने की ज़ज़्बा दिल में कभी झुके ना।

जशवंत एस. नायक
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

पेड़ की अभिलाषा

हरियाली ही हरियाली रहने दो,
हरियाली ही हरियाली बहने दो |
ना काटो, ना सुखाओ, ना जलाओ,
बस बचाओ मुझे,
हरा - भरा ही रहने दो हरियाली रहने दो |

देखा है मिलकर, देखा है संग पलकर,
फिर तुम्हीं मुझे दोषी ठहराओगे,
फिर तुम्हीं मुझे काटोगे।
हरियाली ही हरियाली रहने दो,
हरियाली ही हरियाली बहने दो |

तुम्हारी जिंदगी में,
मैं काम आता हूँ,
क्योंकि अगर मैं नहीं होता,
तो आज तुम यहाँ नहीं होते।
हरियाली ही हरियाली रहने दो,
हरियाली ही हरियाली बहने दो |

चाहे बादशाह हो या गरीब,
सब मेरी छाया में बैठते है,
और आनंद लेते है,
इसलिए तो मैं कहता हूँ,
पेड़ बचाओ ! पेड़ बचाओ ! पेड़ बचाओ |

हनिशा राकेशभाई पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

अभिलाषा

मन में भले हो लाख निराशा,
फिर भी दिल में एक अभिलाषा !
भारत माँ के चरणों पर,
अर्पण कर दूँ जन्म ज़रा सा !
ये वो भूमि है जहाँ पर,
वीर भगत सिंह पांडे हुए !
आज़ादी की पावन वेदी पर,
हँसते हुए बलिदान हुए।
आए ग़र हम यहाँ तो,
अपनी है यह अभिलाषा !
खेत खलिहान ही नहीं पर,
इन्सानों से बनता देश।
इंसान है हम गर यहाँ के,
फिर क्यों हम जाए परदेश ?
देश में रहकर, सेवा देश की,
अपनी तो है यही अभिलाषा !
मन की निराशा दूर करे,
'रिया' की यही अभिलाषा |

पटेल रिया परिमलकुमार
आश्रमशाला भक्ताश्रम इंग्लिश मि. स्कूल
नवसारी

देश का सहारा

कोई न जाने या कोई जाने, एक अनोखी अभिलाषा।
लेकिन मुझे ज़रूर पता है, मेरी अभिलाषा की परिभाषा।
मेरी अभिलाषा की कहानी, यह जग बना देगा मर्दानी।
है मन में एक ही आशा, पढ़ - लिखकर मैं जाऊँ नासा।
कुछ बात अनकही हो जाए, कुछ साज़ अनसुने रह जाए।
पर जो बनना है बनके रहूँगा, पूर्ण करूँगा हर जिज्ञासा।
हर साँस मेरी हो उसको पाने, चाहे हो कितने ही फ़साने।
नहीं हारूँगा आखिरी दम तक, जब तक धड़के दिल धक्-धक्।
कलम-स्याही मेरी अपनी, है मेरी अभिलाषा की जादुई घड़ी।
खुद को करना है न्योछावर, आगे बढ़ना है मेहनत कर।
सोच मेरी जहाँ तक पहुँचे, चाहूँ मैं पहुँचना वहाँ।
कदम मेरे अविरत हो, मंज़िल हो जहाँ - जहाँ।
सूरज - तारे चाँद सितारे सभी हों मेरे और तुम्हारे।
पल-पल मरना नहीं गवारा, जीना मुझको जीवन सारा।
भारत देश स्वतंत्र हमारा, दिया उसने मुझे इशारा।
पढ़-लिखकर बन जाऊँ ऐसा, बनूँ भारत देश का सहारा।

हर्ष ए. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

पंछी बनूँ

सावन का महीना ज्यों - ज्यों, ही पास आता है।
मन करता है मोर की तरह पंख फैलाए नाचने का ।
रंग - बिरंगे पंख फैलाकर, सुंदर - सुंदर नाच दिखाकर ।
मन करता है मोर की तरह, पंख फैलाए नाचने का।
एक छत से दूसरी छत पर, पंख फैलाए नाचता है ।
मन करता है मोर की तरह, पंख फैलाए नाचने का ।
आसमान में उड़ने लगता, ठंडी -ठंडी हवा भरता है ।
मन करता है मोर की तरह, पंख फैलाए नाचने का ।
तरह - तरह के नाच दिखाकर, बच्चों का मन बहलाता है ।
मन करता है मोर की तरह, पंख फैलाए नाचने का ।

अस्मिता पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

चाहता हूँ

हे प्रभु !
अपनों को गले लगा ना सकूँ, इतनी ऊँचाई कभी मत देना।
गैरों को गले लगा न सकूँ, इतनी रुखाई कभी मत देना।
क्या हार मैं, क्या जीत मैं, चिंतित नहीं भयभीत मैं।
कर्त्तव्य पथ पर जो भी मिला, यह भी सही, वह भी सही,
वरदान नहीं माँगूगा, चाह कर भी, पर हार नहीं मानूँगा।
उगता हुआ सूर्य हूँ मैं, सब कुछ नया कर जाऊँगा।
जग खोल जरा अपनी आँखें, मैं तुमको राह दिखाऊँगा।
रुकना चाहता हूँ, दिखे खुदा अगर तो झुकना चाहता हूँ।
इन अंधेरी राहों में, जगमगाना चाहता हूँ।
मुरझाते हुए उपवनों को, महकाना चाहता हूँ।
शांत निश्चल समन्दर में, तरंग लाना चाहता हूँ।
बारिश के बाद, इन्द्रधनुष बन जाना चाहता हूँ।
ख़त्म हुईं खुशियाँ ज़माना गुज़र गया,
फिर उनके दामन में छिपना चाहता हूँ।
बुझ गया दिया और अंधेरा छा गया,
उसे फिर जला रोशनी लाना चाहता हूँ।
बिना शिकायत जिंदगी से, बस चलते रहना चाहता हूँ।
पर वक्त को मुट्ठी में, बाँध कभी बस थम जाना चाहता हूँ।
सूरज डूबा, शाम हुई, बस अपने घर लौटना चाहता हूँ।
थक गया जिंदगी से लड़ते, माँ, तेरा हाथ सिर पर चाहता हूँ।

किशन ए. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

बेटी

श्वेत अश्रु जैसी जन्मी थी मेरी बेटी, कोयल सी मधुर बोली,
नील गगन सी उसकी आँखे, जो ले गई सबका दिल चुराके ।

घरवालों का चेहरा था मुरझाया, बेटी बचाओ कितना समझाया ।
लाख कोशिश की बचाने की, उन्होंने कसर नहीं छोड़ी मुझे डराने की ।

पूजते थे वो अपनी कुलदेवी को, एक बेटा बढ़ाने अपनी पीढ़ी को,
उन मूर्खों को क्या पता, बेटा बढ़ाता है एक पीढ़ी को,
बेटियाँ बढ़ाती है दो पीढ़ियों को, मेरी एक गलती की वजह से,
चली गई मेरी बेटी मुझसे दूर, गई थी उसकी दादी के साथ,
लौटी उसकी दादी खाली हाथ ।

पता नहीं कैसे उसने सहा होगा इतना,
लेकिन उसने मरते दम तक हिम्मत नहीं हारी,
गई तब छोड़ गई चेहरे पर एक मुस्कान,
और बना गई हम सबको एक अच्छा इंसान ।

इस प्रथा के खिलाफ लड़ूँगी, किसी से न मैं डरूँगी,
फिर चाहे खानी पड़े मार, कभी न मानूँगी मैं हार ।
बेटियाँ तो हैं चिराग़ घर का, खुलता है दरवाजा खुशियों का ।
घर-घर की लक्ष्मी नाम है जिसका, देश बढ़ाने में नाम है उसका ।
नहीं होने दूँगी मैं कोई अन्याय, दिला के रहूँगी सभी बेटियों को न्याय ।
खुल के साँस ले पायेगी हर बेटी, खुद के पैरो पर खड़ी हो पायेगी हर बेटी ।
गंगा, सरस्वती, सरयू और सिन्धु, बेटी तो है ओमकार का बिंदु ।
वो तो है अपने पिता का गुमान, बेटियाँ हैं सबसे महान ।

काम्या जी . पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

बेटी हूँ ......

मैं भी लेती श्वास हूँ, पत्थर नहीं इन्सान हूँ ।
कोमल मन ही मेरा, वही भोला सा है चेहरा ।
जज़्बात में जीती हूँ, बेटा नहीं बेटी हूँ ।
जब माँ ही जग में न होगी, तो जन्म किससे पाओगे ?
जब घर में बेटी ही न होगी, तो किस पर लाड़ लड़ाओगे ?
जिस दुनिया में स्त्री ही न होगी, उस दुनिया में कैसे रह आओगे ?
कैसे दामन छुड़ा लिया, जीवन के पहले ही मिटा दिया ।
तुझसे ही बनी हूँ, बस प्यार की भूखी हूँ ।
जीवन पार लगा दूँगी, आजमा लो ! तुम्हारा नाम रोशन कर जाऊँगी ।
जब बहन न होगी घर आँगन में, तो किससे रुठोगे, किसे मनाओगे ?
जब कोई स्वप्न सुंदरी ही न होगी, तो किससे ब्याह रचाओगे ?
सोचो ! घर में बहू न होगी, तो वंश आगे कौन बढ़ाएगा ?
कभी न दिया मौका, सदा पराया बनाकर सोचा ।
एक बार गले से लगा लो, फिर चाहे हर कदम आजमालो ।
हर लड़ाई जीत कर दिखाऊँगी, मैं अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी ।
चंद लोगों की सुन ली तुमने, मेरी पुकार ना सुनी।
मैं बोझ नहीं, भविष्य हूँ, बेटा नहीं बेटी हूँ में ।
जजबातों में जीती हूँ, बेटा नहीं बेटी हूँ मैं ।
पापा मेरी पुकार तो सुनो, अपनी गुड़िया को जन्म का मौका तो दो ।
कभी न करूँगी कोई शैतानी, ना कुछ माँगूंगी,
एक मौका तो दो, तुम्हारा नाम रोशन कर जाऊँगी ।
मैं जजबातों में जीती हूँ, बेटा नहीं बेटी हूँ मैं ।

मिशा पी. पटेल
बी. आर. जे .पी. पारडीवाला
इंग्लिश मीडियम स्कूल, पारडीवाला

मुझे बचाओ

आओ, तुम सब एक काम करो, तुम बेटी बचाओ ।
ख्याति की इस दुनिया में, तुम भी अपना नाम कमाओ।
बेटों से भी बढ़कर सभी काम करती हैं बेटियाँ,
पैसे भी कमाती और बनाकर भी देती हैं रोटियाँ
चली जाएँगी फिर वह ससुराल, उसे तुम मत रुलाओ।
आओ, तुम सब एक काम करो तू बेटी बचाओ।
पापा की लाड़ली, सभी के दिल में रहती।
त्याग की मूर्ति, वह सब कुछ सहती।
उस नन्हीं - सी कली को तुम मत सताओ।
आओ, तुम सब एक काम करो, तुम बेटी बचाओ।
माँ भी किसी की बेटी थी, वह भी घर की प्यारी थी।
उस जननी की यादों को तुम मत मिटाओ,
आओ, तुम सब एक काम करो, तुम बेटी बचाओ।
यह एक महापाप है, कोई बच्ची को मारना ।
बच्चे को पाल सकते हो, क्यों नहीं चाहते बच्ची को पालना ?
उस बच्ची को प्यार देकर तुम भी थोड़ा पुण्य कमाओ।
आओ, तुम सब एक काम करो, तुम बेटी बचाओ ।

दीप बी. राथ्था
आश्रमशाला भक्ताश्रम इंग्लिश मि. स्कूल
नवसारी

बेटी बचाओ

मिट्टी की खुशबू - सी होती हैं बेटियाँ,
घर की राजदार होती हैं बेटियाँ,
सृष्टि का मूल का मूल आधार होती है बेटियाँ,
संस्कृति की संवाहक होती है बेटियाँ,
बचपन है बेटियाँ जवानी हैं बेटियाँ,
सत्यम, शिवम् , सुन्दरम् होती है बेटियाँ,
ईश्वर की अनुकंपा होती है बेटियाँ,
भविष्य की जन्मदात्री होती है बेटियाँ,
फिर क्यों जला देते है ससुराल में बेटियाँ,
फिर क्यों ना बाँटें खुशियाँ जब होती है बेटियाँ ?
अभिशाप नहीं वरदान देती है बेटियाँ,
एक अनमोल धरोहर होती है बेटियाँ,
एक नहीं दो वंश चलाती है बेटियाँ,
फिर गर्भ में क्यों मार दी जाती है बेटियाँ ?
सभ्यता की पालनहार होती है,
तभी तो सर्वश्रेष्ठ होती है बेटियाँ,
सृष्टि को जीवनदान देती है बेटियाँ,
धरती की पहचान होती है बेटियाँ,
सतीरुप देवी भी होती है बेटियाँ,
कालीरूप चंडी भी होती है बेटियाँ,
मेघ धनुषय के सात रंगों-सी होती है बेटियाँ,
फूलों और कलियों - सी होती है बेटियाँ,
फिर क्यों नहीं चाहते लोग बेटियाँ ?
जब कि बेटे से अच्छी होती हैं बेटियाँ |

ममताकुमारी आई .पटेल
श्री आर. एन. जी पटेल सार्व. विद्यालय,
सिसोद्रा, नवसारी

बेटी महान

रे मन दुखी आज क्यों है ?, बादल छाए ऐसे घने क्यों हैं?
क्षण इतने से भी कठिन, देखे कई बार तुमने,
फिर भी आज इतना विकल क्यों है ?
रे मन दुखी आज क्यों है ? बादल छाए ऐसे घने क्यों हैं ?
सम्मान एक औरत का नारी जाति का गर है,
दायित्व परम्पराओं का भी उन्हीं के सर है,
फिर हर घर हर पल अपमान उनका क्यों है ?
रे मन दुखी आज क्यों है ? बादल छाए ऐसे घने क्यों हैं ?
रोशन करती है बेटियाँ भी नाम देश का,
पहुँचाना अंतरिक्ष में प्रमाण है जिसका,
फिर अविश्वास उन पर आज भी हमें इतना क्यों है ?
रे मन दुखी आज क्यों है?, बादल छाए ऐसे घने क्यों हैं ?
माँ बहन या हो पत्नी, हर सम्बन्धों की मूल है बच्ची नन्हीं,
अहम भी सृष्टि के लिए तो, जानते हैं हम सभी,
फिर भी लोग गर्भ में मारते क्यों हैं ?
रे मन दुखी आज क्यों है?, बादल छाए ऐसे घने क्यों हैं ?
आखिर लाई हमें भी एक औरत,
उनके दर्जे से नहीं ऊँची कोई इमारत,
तो क्यों करें भेद भाव उनसे ?
उन्होंने ही दी है हमें जान और पहचान,
बेटियाँ हैं महान, चलो करे उनका सम्मान ।

जेनिश के. पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सपनों की तितली

एक नन्हीं सी कली, माँ के गर्भ में पली,
आशा का सवेरा दिल में सँजो के चली,
एक रोज वो आएगा जब जग में होगी आँखें खुली,
माँ की गोद में, पिता की आँखों में गुनगुनाती कली,
बाहर के संसार से अनजान सपने संजोते चली,
माँ, बाबा के सपनों की तितली ।

माँ ना जाने,ना बाबा जाने वजूद में कौन पली,
जग ने जब जाना वजूद में तितली,
बाबा को कोसा, माँ को भी तीखी वाणी मिली,
ना चाहिए कोई तितली, ना चाहिए कली,
दादा को न भाए, दादी को भी खली,
माँ बाबा के सपनों की तितली।

फिर जब जग में आई वो नन्हीं कली,
उसकी मुस्कान लगी सबको भली,
भैया के संग हँसती- रोती तितली,
अपने नन्हे हाथों से दुनिया को रँगते चली,
सबको जैसे बेटी के रूप में देवी हो मिली,
माँ बाबा के सपनों की तितली ।
समय के साथ वो बढ़ निकली,
जग में चमकी वो बन बिजली,
तलवार की धार पर खड़ी पर हिम्मत न ढली,
देश का नाम जग में रोशन कर चली,
अपने सपनों को कर बुलंद, खिल गई वो नन्हीं कली,
माँ बाबा के सपनों की तितली ।

अमी पटेल
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

सुहाना बचपन

देखता हूँ बच्चों का लड़कपन,
याद आता है, मुझे मेरा बचपन|
सोचता हूँ फिर से बच्चा बन जाऊँ
धमा-चौकड़ी फिर से मचाऊँ,
तोतली ज़ुबान से पापा-पापा चिल्लाऊँ,
पर वो जादू की छड़ी कहाँ से लाऊँ ?
जिससे फिर से बच्चा बन जाऊँ|
देखता हूँ बच्चों का लड़कपन ,
याद आता है, मुझे मेरा बचपन
याद आता है, वो समय
दिनभर खेलना बच्चों के साथ हो कर निर्भय ,
माँ के डाँटने से घर जाता था
खाना खाकर जल्दी सो जाता था।
देखता हूँ बच्चों का लड़कपन,
याद आता है, मुझे मेरा बचपन।
भाईयों के साथ झगड़ा बढाता था
पापा के आने पर शांत हो जाता था,
पहिए दौड़ा कर खेला करता था
पेड़ों की पतली टहनियों पर चढ़ा करता था।
देखता हूँ बच्चों का लड़कपन,
याद आता है, मुझे मेरा बचपन।

अंश विजयभाई पटेल
डिवाइन पब्लिक स्कूल, नवसारी

मेरी सोने की चिड़िया

मैं जब छोटा था सुनी थी कहानी 'सोने की चिड़िया'।
हर गली मोहल्लों में आज ढूँढ रहा हूँ, वह अनोखी चिड़िया।
हर तरफ सुनने को मिलती है,बिजली-सड़क-पानी की गुहार।
कहाँ गायब हो गई सोने की चिड़िया की फुहार?
इक्कीसवीं सदी को हम मानते हैं कमप्यूटरों का संसार।
कहाँ से मिलेगा ढेर सारे कमप्यूटर को पावर ?
बी.एम. डबल्यू और लिमोजिन की दुनिया में रखना चाहते हैं हम कदम।
लेकिन हमारी सड़कों की हालत बना देती है हमारी आशाओं का मातम।
हमारे देश को जाना जाता है गांधी और नेहरू की धरोहर।
कहाँ गायब हो गया सोने के भारत का वो सरोवर ?
शायद हम सब हैं इसके लिए ज़िम्मेदार
वरना सोने की चिड़िया का कैसे हुआ बंटाढार?
आओ मित्रों, देवी और सज्ज्नों कर लें आज प्रण, इसी क्षण,
वापस लाएँगे सोने कि चिड़िया का वह गुमान ?
और गर्व से कहेंगे मेरा भारत महान, मेरा भारत महान।

बिभूति नारायण बिस्वाल
प्राचार्य
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

माँ तू कितनी निर्दयी है

माँ का सपना बेटा हो, और पिता ललकते हो बेटी
मार दिया कोख़ में ज़ालिम, माँ तूने जन्म से पहले ही
बेटे की आस में माँ तेरी, कोख अभी भी है सूनी
आबाद तेरा आँगन करती, लेकिन तू तो है खूनी
अब क्या होगा? पास तेरे, न बेटा है और ना बेटी
माँ, कितना अच्छा होता, जो मैं बेटे का जन्म लेती
ये दुनिया कितनी सतरंगी है, देख नज़र भर लेती
मेरे शैशव और बचपन से, पलभर तो चहक लेती
बनती जो मैं बेटा तो अरमाँ मैं पूरे कर लेती
घर के बाहर मैं भी, क्रिकेट-फुटबॉल खेल रही होती
बोर्नविटा न सही,पानी पीकर खूब मचल रही होती
बेटा नहीं बेटी का ही, जन्म लेने दिया होता तो
टैडी और गुड्डे - गुड़ियों से, मस्त खेल रही होती
मंजिल तक साइकल में पैडल, मार कहीं उड़ जाती मैं
बॉडी-गार्ड बिना ही दुस्तर, कठिन सफ़र तय कर जाती मैं
खो-खो, तैराकी में मैडल, सहज जीत ही लाती मैं
जाने क्यों मेरी अभिलाषा, डाँवाडोल सी होती है
कभी बेटा कभी बेटी, बनने की चाह होती है
नफ़ा और नुकसान दोनों में है,जो है सो 'मोती' है
हो भेदभावजब बेटा-बेटी में, बहुत आत्मा रोती है
मैं हूँ तो भावी पीढ़ी है, नहीं तो बंजर सी खेती
बेटा हो या बेटी हो, संतति तो मुझसे से होती
दोनों ही से वंश चलेगा, बेटा हो या हो बेटी
मेरी हत्या पर तो किसी के, पाप नहीं गंगा धोती
मैं हूँ तो जग सुन्दर है, वरना तो धरा ये बंजर है

दिनेश प्रजापति
(वरिष्ठ हिन्दी शिक्षक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

संकल्प

अगर बेटियाँ न होती,
ये जिंदगी बड़ी उदास होती ।
जिन घरों मे बेटी खिलखिलाती है,
उन घरों से दरिद्रता भाग जाती है।
जहाँ बेटी प्रताड़ित होती हैं

उन घरों से सुख समृद्धि रूठ जाती है ।
अगर बेटी न होती तो,

माँ कहाँ से आती ?
कलाई सूनी ही रह जाती,
राखी कौन बाँधती?
पायल छनकाती, कंगना खनकाती,
दूल्हन कहाँ से आती ?
प्रेम सिखाया बेटी ने,
जीना सिखाया बेटी ने ।
फिर क्यों गर्भ में ही,
मार दी जाती है बेटियाँ?
क्यों इन हत्यारों को,
सज़ा नहीं होती ?
अपनी साँस के भी तो,
मालिक नहीं है ये !
फिर क्यों उस विधाता को,
चुनौती देते हैं हत्यारे ?
गर ठान ले हरेक स्त्री,
न करेंगे गर्भ धारण !
बेटा हो या बेटी,
न जन्म देंगे किसी को !
क्या आलम होगा,
वीराना संसार होगा ।
मत बनो तुम कर्ता,
सृजन होने दो ।
फिर बेटा हो या बेटी,
फूल खिलने दो ।
लो संकल्प अब से,
बेटी बचाएंगे बेटी बचाएंगे ।

डॉ. शक्तिबाला वि. मालविया
पूर्व प्राचार्या- ला.सि.सि.हिंदी उ.मा. विद्यालय, सूरत

छुटपन की यादें

कहते हैं कि बीता हुआ समय,
बीता हुआ बचपन कभी लौट के नहीं आता।
वो हँसते-खेलते विद्यालय जाना,
शाम तक खेत-खलिहानों में घूमना,
खो गया वो बचपन,वो छुटपन की यादें।
जाने अनजाने अध्यापक से की मस्ती,
घर परिवार के साथ के त्योहारों की मस्ती,
खो गया वो बचपन,वो छुटपन की यादें।
वो आँख मिचोली, विष अमृत के खेल,
शादी - ब्याह की शाही नवाजी,
खो गया वो बचपन,वो छुटपन की यादें।
माँ का आँचल पकड़कर घूमना,
पिताजी के कन्धों पर बैठकर मेले जाना,
खो गया वो बचपन,वो छुटपन की यादें।
काश, कोई लौटा दे वो, अपने पराए से बिलकुल बेगाने,
सुनहरा बचपन वो सपने सुहाने,वो छुटपन की यादें।

दिव्या बी. ढीम्मर (हिन्दी शिक्षिका)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

लौट आ बचपन

बचपन के वह सुहावने दिन,
जिसमें थी बहुत सारी खुशियाँ,
न किसी प्रकार कि ज़िम्मेदारी थी,
न किसी प्रकार का तनाव।
सिर्फ़ स्कूल जाना और थक जाना,
थक कर भी खेलने जाना था।
चाहत थी बहुत कुछ पाने की,
पर दिल तो तितली का दीवाना था,
वो कागज़ की नाव बनाना,
फिर पानी में मस्ती में तैराना।
माँ और दादी से कहानी सुनना,
पापा और दादा के साथ घूमने जाना।
और अब हम बड़े हो गये,
बचपन बहुत पीछे छूट गया
और ये ज़िम्मेदारियाँ आ गयीं,
काश के यह बचपन लौट आए ।

मोनिका चांपानेरी (हिन्दी शिक्षिका)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

मत मिटाओ मुझे

मैं पत्थर नहीं इंसान हूँ,
मेरा कोमल मन है,
वही भोला सा चेहरा मेरा,
जज़्बातों में जीती हूँ मैं,
मैं बेटा नहीं, पर बेटी हूँ।
कैसे दामन छुड़ा दिया,
जन्म के पहले ही मिटा दिया,
अपनों के लिए मैं बेटा भी बन जाऊँगी,
दिया नहीं कोई ऐसा मौका,
बस पराया बनाकर ही सोचा,
एक बार गले से लगा कर देखो,
फिर चाहे हर कदम आज़मा लो,
मैं अग्नि में जलकर भी जी जाऊँगी,
मैं बोझ नहीं, भविष्य हूँ,
मैं बेटा नहीं, मैं बेटी हूँ।

योगेश ए. पटेल (हिन्दी शिक्षक)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

बेटी अवतार

धन्य तेरे भाग जो बन सका बेटी का बाप
हर लेती हैं बेटियाँ सारे दुःख संताप
सावित्री है वह, जिससे पराजित हुआ काल
उसके आने से होते हैं, दो आँगन खुशहाल
देवी है नारायणी, चंडी, लक्ष्मी अवतार
हत्या करे जो इसकी नरक में सड़े सालों हज़ार
प्यारी सी गुड़िया, जादूकी पुड़िया इतनी शुभ है यार
नफ़रत करनेवालों को भी ये सिखलाती है प्यार
नन्ही मुन्नी जब हँसती है तो बन जाती है जान
मोक्ष मानव को तभी मिले जब होवे कन्यादान

चंद्रकांत श्रीवास्तव (शिक्षक अंग्रेज़ी विभाग)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

है अभिलाषा

सूरज सा दमकू मैं, चंदा सा चमकूँ मैं।
झिलमिल झिलमिल उज्जवल तारों सा दमकू मैं।
मेरी अभिलाषा है, मेरी अभिलाषा।
फूलों सा महकूँ में विहंगों सा चहकू मैं ।
गुंजित कर वन उपवन, कोयल सा कूह्कू मैं।
मेरी अभिलाषा है, मेरी अभिलाषा।
नभ जैसा निर्मल हूँ, रजनी सा शीतल हूँ।
धरती सा सहनशील, परबत सा अविचल हूँ।
मेरी अभिलाषा है, मेरी अभिलाषा।
मेंघों सा मिट जाऊँ सागर सा लहराऊँ।
सेवा के पथ पर सुमनों सा बिछा जाऊँ।
मेरी अभिलाषा है , मेरी अभिलाषा।
भाग्य का सूरज चमका संगम में आनंद मिला,
अंत: चक्षु से देखा साईं तन में, खिला पुष्पों जब मन उपवन में ,
सोलह कला ने संपन्न बनाया, अवगुणों को दिल से हटाया।
सर्वगुणों का साज सजाया, योग शक्ति से पावन बनाया।
पहनाया सफलता की माला और किया जीवन का बेड़ा पार।

गीता पटेल (हिन्दी शिक्षका)
श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

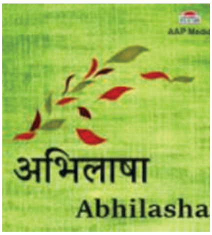

राज्य स्तरीय हिन्दी महोत्सव २०१६
चित्र – पोस्टर

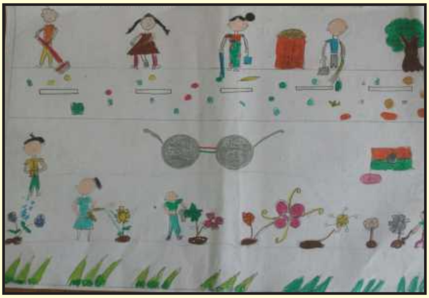

अनुभूति –कक्षा–३
ब्राइड डे स्कूल, बरोडा

टीया ऐ. गोलानी –कक्षा–३
ब्राइड डे स्कूल, बरोडा

माहिमा खतरी –कक्षा–८
ब्राइड डे स्कूल, बरोडा

अंजली सिंग –कक्षा–८
ब्राइड डे स्कूल, बरोडा

मनसा महेता –कक्षा–७
ब्राइड डे स्कूल, बरोडा

मिसा ऐ. तलाती –कक्षा–३
ब्राइड डे स्कूल, बरोडा

हिन्दी उत्सव में आमंत्रित मुख्य अतिथिगण
२००७ - २०१६

वर्ष- २००७

- श्री. ए. चौहान
  प्राचार्य
  केन्द्रीय विद्यालय न. १ सूरत
- श्रीमती सुनीता मट्टू
  प्राचार्या
  बी.वी.बी. नन्द विद्यानिकेतन,
  सूरत
- प्रदीप पाण्डेय
  सम्पादक, पूर्णेश्वर टाइम्स,
  नवसारी

वर्ष २००८

- डॉ. दीपक राजगुरु
  सचिव, रेडियंट इंग्लिश अकैडमी, सूरत

वर्ष २००९

- डॉ. एच.सी.पाठक,
  इंचार्ज उपकुलपति
  नवसारी कृषि विश्व विद्यालय, नवसारी

वर्ष २०१०

- डॉ. मधुकर पडवी
  प्राचार्या
  एम्. टी. बी आर्ट्स कॉलेज, सूरत

वर्ष २०११

- कर्नल. डी. पी. काला (रि.)
  एम. डी.,परमेस डायमंड्स, नवसारी

वर्ष २०१२

- डॉ आर. सी. गांधी
  केम्पस डायरेक्टर,
  नारन लाला कॉलेज, नवसारी

वर्ष २०१३

- डॉ. अलका सिंह
  एसोसिएट प्रोफ़ेसर
  नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी

वर्ष २०१४

- डॉ. उम्मेद सिंह
  प्रभारी शिक्षा विभाग
  वीर नर्मद साउथ गुजरात
  विश्वविद्यालय, सूरत

वर्ष २०१५

- श्री संजय कुमार श्रीवास्तव
  प्रबंधक,
  बैंक ऑफ़ बरोडा, नवसारी
- डॉ. महावीरसिंह गोहिल
  एस. बी. गारडा कॉलेज
  नवसारी

वर्ष २०१६

- डॉ. राधा गौतम
  प्रोफ़ेसर
  एस. बी. गारडा कॉलेज, नवसारी

राज्य स्तरीय हिन्दी महोत्सव छवियाँ २०१८

राज्य स्तरीय हिन्दी महोत्सव २०१६
चित्र / पोस्टर

हीर एम पटेल
७वीं अ-प्राथमिक विभाग
प्रथम पुरस्कार

अंकितराज राजपूत
७वीं ब- प्राथमिक विभाग
द्वितीय पुरस्कार

कीर्तन के पटेल
८ वीं ब - प्राथमिक विभाग
तृतीय पुरस्कार

कौशिक के पटेल
१० वीं ब-माध्यमिक विभाग
सांत्वना पुरस्कार

कार्मिक पटेल
९ वीं ब – माध्यमिक विभाग
सांत्वना पुरस्कार

हिन्दी दशक उत्सव

२००७ से २०१६

श्री सत्य साई विद्यानिकेतन, नवसारी

गणेश वड सिसोद्रा , ने.हा.–८, नवसारी

दूरभाष : (02637) 291030, मो. 96012 61085

Website : www.sssvn.edu.in